मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना

रणधीर कुमार पासवान

शोधार्थी

विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

मिथिलेश्वर हिन्दी साहित्य में मुख्यतः साठोत्तरी पीढ़ी से सम्बद्ध तथा प्रगतिशील चेतना के एक जाने-माने उपन्यासकार हैं। इनका जन्म 31 जनवरी 1950 ई. में हुआ था। मिथिलेश्वर मुख्यतः ग्रामीण जीवन से सम्बद्ध कथानकों के प्रति समर्पित कथाकार मिथिलेश्वर सीधी-सादी शैली में विशिष्ट रचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने में सिद्धहस्त माने जाते हैं। मिथिलेश्वर के अब तक कुल छह उपन्यास हैं, जिसमें सबसे पहला उपन्यास- 'झुनिया' (1980 ई.), दूसरा 'युद्धस्थल' (1981 ई.), तीसरा 'प्रेम न बाड़ी उपजै' (1985 ई.), चौथा 'यह अंत नहीं' (2000 ई.), पाँचवाँ 'सुरंग में सुबह' (2003 ई.), छठा 'माटी कहे कुम्हार से' (2006 ई.) प्रकाशित है।

इनके उपन्यास प्रायः बिहार के गाँव को केन्द्र में रखकर लिखे गये हैं। चूँकि इनके जन्म का ताल्लुक भी बिहार के भोजपुर जिले के बैसाडीह नामक गाँव से है। इनके पिता स्व. प्रो. वंशरोपन लाल थे। मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेमचंद और रेणु के बाद गाँव सम्बद्ध कथा-लेखन में मिथिलेश्वर का सबसे पहले है। इन्होंने गाँव के प्रायः असहाय विधवा और वन्ध्या औरतों को डायन बताकर उपेक्षित किया जाता है और उनकी हत्या कर दी जाती है। इनके 'युद्धस्थल' (1981 ई.) उपन्यास में दूधनाथ चौधरी रामशरण के बहू को डायन करार देकर अपने पुत्र की मृत्यु का कारण मानता है। गाँव के ओझा उसके इस विश्वास पर पुष्ट कर देते हैं। वह रात के अंधेरे में असहाय अकेली रामशरण की बहू की हत्या करा देता है, लेकिन अब गाँव जाग रहा है। गाँव के नौजवान दुखन, बोधा और पुस्तकालय की बैठक के लड़के इस घोर अन्याय के विरुद्ध खड़े होते हैं। इस प्रकार उपन्यास लेखकीय उद्देश्य की पूर्ति करते हुए समाप्त होता है। 'प्रेम न बाड़ी उपजै' (1995 ई.) में इन्होंने रुपेश और शकुन्तला को केन्द्रित पात्र के माध्यम से जीवन-यथार्थ के धरातल पर विकसित इनकी प्रेमकथा से लेखक ने अपना प्रेम-दर्शन को दिखाया है। लेखक प्रेम की दिव्यता, अमरता आदि में विश्वास नहीं करता। लेखक की दृष्टि में वह प्रेम, जिसमें प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे को उत्सर्ग कर देते हैं। यह अपवाद है। वह हमारे सामान्य सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व नहीं करता। लेखक की यह भी मान्यता है कि नारी-जाति पुरुषों की अपेक्षा प्रेम को अधिक गहरे जीती है। लेखक प्रेम को वर्ग-चेतना से ऊपर की नहीं मानता। उसके अनुसार रुप के मादक आकर्षण से तूफान की तरह उमड़ने वाला प्रेम तूफान के गुजर जाने पर जब जीवन की खुरदुरी जमीन पर स्थिर होता है।

'यह अंत नहीं' (2000 ई.) उपन्यास में मिथिलेश्वर ने अंतहीन बनती समस्याओं के खिलाफ मानवीय संघर्ष की विजयगाथा का जीवंत उपन्यास है। जीवन की सकारात्मक चेतना और अपराजेय मानवीय जिजीविषा का सार्थक उद्घोष है तथा ग्रामीण जीवन की जमीनी सच्चाई के बेवाक चित्रण है। इसमें तीन गाँवों का चित्रण है— 'खवासडीह', 'पहाड़पुर' और 'रघुनाथपुर' को आधार बनाकर बिहार के ग्रामीण जीवन की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत की गई है। 'खवासडीह' बडटोली और करहटोली में बँटा है। बड़टोली अभी भी करहटोली का शोषण-दमन कर रही है। 'पहाड़पुर' में पिछड़ों का दबदबा है। 'रघुनाथपुर' में छोटे-बड़ों का पलड़ा बराबर है। इन तीनों गाँवों के माध्यम से बिहार के ग्रामीण-जीवन का जो चित्र उभरता है वह कुछ इस प्रकार है– "गाँव में वर्ग-चेतना और जाति-चेतना उभार पर है। प्रत्येक जाति की अपनी हथियारबंद सेना है। खूनी संघर्ष से घबराकर लोग

© Copyright @ Authors

शहरों की ओर पलायन करते हैं। सभी में असुरक्षा का भाव है। राजनीति दिशाहीन हो गई है। वर्ग-चेतना का कोई वैचारिक आधार नहीं है चुनावों में जातिवाद, गुंडागर्दी में बूथ कब्जा का बोलवाला है। दलित-चेतना भी उभरने लगी है।

बिहार के गाँव अब 'नागार्जुन' या 'रेणु' के गाँव नहीं हैं। गाँवों में अब सभी तरह के अंतर्विरोध खुलकर सामने आ गये हैं। विशेष बात यह है कि अब दलित और शोषित समाज बचाव के मुद्रा नहीं प्रतिरोध की स्थिति आ गई है। लेखक ने चुनिया और जोखन दम्पति के कथा सूत्र को विस्तार देकर इस उभरते हुए प्रतिरोध को आकार देने की कोशिश की है। इस उपन्यास में भी अनेक-संदर्भ और सूत्र प्रायोजित और अविश्वसनीय प्रतीत हैं। विशेषतः चुनिया और जोखन से संबंधित संदर्भ-सूत्र। कहीं-कहीं आकस्मिक और अतिनाटकीय स्थितियाँ, जैसे– दुर्दांत छेदी डकैत पर चुनिया का रिवॉल्वर चलाना और अकेले एक सिद्ध जासूस की तरह घुसते, भागते अपना नाम पता छिपाते अंततः उसी ठिकाने पर पहुँचना जहाँ जालिमों ने जोखन को छिपाया था– भी कथा को कमजोर बनाती है। इस कमजोरी के बावजूद बिहार के गाँवों– विशेषतः भोजपुर अंचल— कि बदलती हुई प्रकृति को साक्षात्कार कराने में यह उपन्यास पूरी तरह समर्थ है।

'सुरंग में सुबह' इनका पहला राजनीतिक उपन्यास है। इसमें आज की राजनीति का घिनौना चेहरा बेनकाब है। राजनीति के क्षेत्र में उच्चतर पदों पर आसीन होने के लिए आज सेक्स का इस्तेमाल हो रहा है। गनीमत यह है कि सदियों की दबी-कुचली जनता न की आज जाग उठी है। वह सामाजिक बदलाव के लिए बेचैन है। इस बेचैनी का तल्ख इजहार इस उपन्यास की एक बड़ी उपलब्धि है। इनका नवीनतम उपन्यास 'माटी कहे कुम्हार से' (2006 ई.) में प्रकाशित हुआ है। 510 पृष्ठों की यह वृहत् महागाथा मिथिलेश्वर के कथा-साहित्य की बड़ी उपलब्धि है। इसमें झोपड़-पट्टियों में रहने वाले गरीबों, भारतीय ग्रामीणों और शहर में रहने वाले भद्र समाज के जीवन की अन्तर्कथा की परतें उधेड़ कर रख दी गई हैं और अन्ततः भारतीय लोकतंत्र की खामियों को भी उजागर किया गया है। हम यह कह सकते हैं कि इक्कीसवीं सदी के भारतीय जीवन को समग्र रूप में प्रस्तुत करने वाले अपनी तरह का अन्यतम उपन्यास है। मिथिलेश्वर एक प्रतिबद्ध लेखक हैं।

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना के अनुरूप भारतीय ग्रामीणों में अंतर्निहित सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक विकृतियों को इन्होंने अत्यंत प्रगतिशीलता से अपने उपन्यासों में उजागर किया। मिथिलेश्वर ने 'प्रेम न बाड़ी उपजै' में पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों से परिचय करवाया, जिसमें डॉक्टर साहब, दीदी और रूप के बीच प्रेम की सम्पूर्णता एवं हीनता को दिखाया है। शेक्सपियर के अनुसार "Love at first side the course of love did not run smooth". डॉक्टर साहब की सोच संकुचित और रुढ़िवादिता के कारण उनके विचारों में सामंजस्य नहीं था। लड़की के पिता आर्थिक दृष्टि से कमजोर भी थे।

मिथिलेश्वर का उपन्यास 'यह अंत नहीं' अपनी प्रखर गुणवत्ता के कारण बहुत चर्चित रहा है। इस प्रखरता का कारण कथ्य की जमीन से लेखक का अपमान एवं यथार्थानुभूति है। मूल रूप यह मिथिलेश्वर का चौथा उपन्यास है। इसमें बदलते हुए राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक परिवेश के गाँव और लगातार ह्रासमान मानव मूल्य और रसातल को जाती कलिल मानवता से भरे गाँव का जीवंत चित्र यहाँ प्रस्तुत हुआ है। पिछले पचास वर्षों से अधिक समय में अपनी लेखनी द्वारा हिन्दी-साहित्य को समृद्धि प्राप्त करवाने वाले मिथिलेश्वर जी की अब तक अनेक गद्य रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिन्दी-साहित्य में उनका योगदान स्मरणीय है परन्तु उनकी ख्याति मुख्यतः एक ग्रामीण जीवन के कथाकार के रूप में है। कथा साहित्य के अंतर्गत अब तक उनके बारह कहानी, छह उपन्यास और तीन आत्मकथात्मक उपन्यास प्रकाशित हैं।

© Copyright @ Authors

यह तो सर्वविदित है ही कि मिथिलेश्वर जी मूलतः ग्रामीण जीवन के एक सशक्त कथाकार हैं। रचना के क्षेत्र में उनके आगमन का एक प्रमुख कारण ग्राम्य-जीवन का दुख-दर्द भी रहा है। ग्राम्य जीवन की विभिन्न परिस्थितियों और विसंगतियों को उन्होंने देखा भी है और भोगा भी है। उन्होंने अपने आत्मकथात्मक उपन्यास 'पानी बीच मीन पियासी' में इस यथार्थ का उल्लेख करते हुए कहा है कि– "अपने गाँव और ग्रामीण जीवन की विंत्ताओं-समस्याओं से मैं अपने बचपन से ही आक्रांत था। मुझे तो लगने लगा की अनंत विषियों के खान के बीच में हूँ। अभावों, उपेक्षाओं तथा बंद परिवेश की अज्ञानताओं से घिरा मेरा समाज कथा का भंडार है। इसे प्रकाश में लाने के लिए इस पर रोशनी देनी तथा अपनी समझ के अनुसार इसकी चेतना को जागृत करना मेरे रचनाकार का उद्देश्य होना चाहिए। फिर तो अपनी इस उद्देश्य के प्रति मैं सक्रिय हो गया।" यद्यपि मिथिलेश्वर उन उपन्यासकारों में से हैं जिनका रचनाकर्म अपनी मिट्टी से उपजे मानवीय यथार्थ से सुदृढ़ हुआ। मिथिलेश्वर ने अपने साहित्य में सदियों से सतायी हुई विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया। 'प्रेम न बाड़ी उपजै' उपन्यास में मध्यमवर्गीय सुशिक्षित मोना (शकुन्तला श्रीवास्तव) की प्रेमकथा है। नायक पूर्वनियोजित षड्यंत्र के तहत न तो नायिका के धोखे में फँसता है, न चालाकी से भागता है और न ही जानबूझकर उसे बर्बाद करता है। शिक्षित मध्यमवर्गीय स्त्री शकुन्तला श्रीवास्तव (उर्फ मोना लिसा) का प्रेम उच्चवर्गीय परिवार रूपेश से हो जाता है। मोना और रूपेश दोनों एक दिन पलायन करते हैं और जगह-जगह भटकते हैं। कठोर यथार्थ की दलदली जमीन... प्रेम की भयानक विडंबनाएं अंतः उसे निराश हो जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि मिथिलेश्वर ने प्रगतिशील चेतना को केंद्र बनाकर ग्रामीण जीवन और संघर्ष के अंतर्गत विभिन्न समस्याओं और उससे निपटने का काम किया है। इस प्रकार मिथिलेश्वर ने साहित्य में वर्तमान ग्रामीण परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण किया। गरीबी, बेरोजगारी, असुविधाओं आदि की वजह से ग्रामीण समाज बदतर ज़िन्दगी जीने के लिए विवश है। मिथिलेश्वर अपनी कथाओं में वर्तमान समय के गाँव के बदलते चेहरों को रेखांकित किया। इस ओर हमारा ध्यान खींचने का प्रयास किया है और उसमें सफल हुए हैं। इनके उपन्यासों में कई प्रकार के संघर्ष हैं, अधिकांशतः उनकी रचनाओं में पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक संघर्ष की श्रेणी चलती रहती है। संघर्ष मनुष्य को कई प्रकार के भावों से कमजोर बनाती है। संघर्ष मनुष्य को कई प्रकार की विचारधाराओं से परिचय कराती है। मिथिलेश्वर के उपन्यासों में ग्रामीण, कस्बाई एवं शहरी संस्कृति का प्रत्यात्मक स्वरुप दिखाई पड़ता है।

संदर्भ-सूची–

1. हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान- कला मंदिर, डॉ. सिंह शशि भूषण, प्रथम संस्करण 2022 ई.
2. हिन्दी उपन्यास का विकास- मधुरेश, नवम संस्करण, प्रयागराज, 2018
3. 'युद्धस्थल'- मिथिलेश्वर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, दूसरा संस्करण
4. 'यह अंत नहीं'- मिथिलेश्वर, किताबघर प्रकाशन, 2000 ई.
5. 'पानी बीच मीन पियासी'- मिथिलेश्वर, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार, नई दिल्ली, चौथा संस्करण 2019 ई. पृ. 429
6. 'प्रेम न बाड़ी उपजै'- भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार दिल्ली प्रकाशन 2005, पृ. 117
7. उपन्यास की संरचना- राय गोपाल, राजकमल प्रकाशन 2020
8. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और मानवीय अर्थवत्ता- डॉ. नवलकिशोर, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 1977 ई.
9. आधुनिक हिन्दी उपन्यास- संपादक: भीष्म साहनी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1975 ई.

© Copyright @ Authors

10. आधुनिक हिन्दी साहित्य– डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिन्दी परिषद, प्रयाग, 1971 ई.
11. आधुनिक हिन्दी साहित्य– नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1981 ई.
12. हिन्दी उपन्यास– डॉ. सुषमा धवन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1961 ई.
13. हिन्दी कथा साहित्य– गंगा प्रसाद पांडेय, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद, 1951 ई.
14. हिन्दी उपन्यास– डॉ. शिवनारायण श्रीवास्तव, सरस्वती मंदिर, वाराणसी, 1968 ई.
15. हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा– रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981 ई.

© Copyright @ Authors